Methods of Qualitative or Selective Credit Control (Part - B)

1. Credit Rationing :

साख की रेशनिंग गुणात्मक नियंत्रण का सर्वाधिक प्रधान तरीका है। इस तरीके को अपनाने से केंद्रीय बैंक का देश की बैंकिंग व्यवस्था पर अधिकार बढ़ जाता है। यह सर्वविदित है कि केंद्रीय बैंक देश के व्यावसायिक बैंकों तथा मुद्रा-बाजार की संस्थाओं का अन्तिम ऋणदाता के रूप में कार्य करता है। अन्तिम ऋणदाता के रूप में केंद्रीय बैंक जब अन्य बैंकों की माँग को पूर्ण रूप से पूरा नहीं कर इसका राशन कर दे या उधार दी जानेवाली रकम पर कुछ प्रतिबन्ध लगाये तब बैंक की ऋण प्रदान करने की राशि कम हो जाने से उनकी साख-सृजन की शक्ति भी कम हो जाती है। केंद्रीय बैंक की इस नीति को साख की रेशनिंग भी कहते हैं।

केंद्रीय बैंक साख की रेशनिंग सामान्यतया निम्नलिखित तरीकों से करता है :—

(A) किसी बैंक के पुनः भुनाने की सुविधा को बिलकुल समाप्त कर,

(B) किसी बैंक के पुनः भुनाने की सीमा पर नियंत्रण लगाकर,

(C) विभिन्न बैंकों द्वारा विभिन्न उद्योगों को दिये

Scanned with CamScanner

जाने वाले साख के अग्रांश को निश्चित करके।
किन्तु इस नीति को कार्यान्वित करने में केन्द्रीय बैंक को निम्नांकित कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है :—

1. सर्वप्रथम तो उसे विभिन्न उद्योगों की साख-सम्बन्धी आवश्यकताओं का अनुमान लगाकर उसी आधार पर विभिन्न बैंकों को साख-सृजन का आदेश देना पड़ता है।

2. सभी बैंकों के लिए, यदा-कदा अलग-अलग कोटा निर्धारित करना पड़ता है।

3. इससे व्यावसायिक बैंकों की स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है।

4. इसके अन्तर्गत व्यापार की उन्नति साख-मुद्रा की मात्रा से सीमित हो जाती है।

5. अन्तत: प्रजातांत्रिक देशों में इस रीति के प्रयोग में भी कठिनाई होती है।

2. Direct Action :-
केन्द्रीय बैंक कभी-कभी साख-नियंत्रण के साधन के रूप में प्रत्यक्ष तरीके का भी प्रयोग करता है। इस नीति की सफलता के लिए आवश्यक है कि।
(1) केन्द्रीय बैंक को पर्याप्त मात्रा में शक्ति

होनी चाहिए,

(ii) मुद्रा-बाजार में उसका पूरा-पूरा नेतृत्व हो,

(iii) अन्य बैंकों के साथ सहयोग का वातावरण कायम हो।

किन्तु गुणात्मक नियंत्रण के लिए प्रत्यक्ष कार्यवाही निम्नांकित कारणों से संतोषजनक एवं प्रभावपूर्ण नहीं सिद्ध होती है:-

1. इसमें शक्ति की मात्रा निहित रहने के कारण इसका परिणाम बहुधा अनुकूल नहीं होगा।

2. व्यावसायिक बैंक भी साख के वास्तविक प्रयोग के सम्बन्ध में बहुधा अनभिज्ञ रहते हैं तथा आवश्यक एवं कम आवश्यक उद्योगों में अंतर नहीं कर पाते

3. अनुचित नियंत्रण एवं हस्तक्षेप के कारण व्यावसायिक बैंकों को पूर्ण एवं ऐच्छिक सहयोग मिलना भी बंद हो जाता है।

अतः प्रत्यक्ष तरीके की नीति का प्रयोग केवल असाधारण परिस्थितियों के अंतर्गत ही किया जाना चाहिए।

3. Moral Suasion:

इस प्रकार नैतिक दबाव की नीति की सफलता निम्नलिखित दो बातों पर निर्भर करती है:-

Scanned with CamScanner

(i) केंद्रीय बैंक का मुद्रा-बाजार एवं व्यावसायिक बैंकों पर पूरा-पूरा नियंत्रण होना चाहिए;

(ii) उसे इस सम्बन्ध में पर्याप्त अधिकार प्राप्त होना चाहिए,

(iii) देश में सुविकसित वित्त एवं मुद्रा-बाजार होना चाहिए, तथा

(iv) केंद्रीय बैंक एवं अन्य बैंकों में पूर्ण सहयोग एवं सद्भावना होनी चाहिए।

4. Regulation of Consumer's Credit :- द्वितीय युद्ध-काल में सर्वप्रथम इस तरीके का प्रयोग